डी० बी० कॉलेज जयनगर
एल० एन० एम० यु० दरभंगा

नाम - मो० मुन्ना
सहायक प्राचार्य (अतिथि शिक्षक)

दिनांक - 29,04,2020

मैथिली विभाग

बी.ए - 1st part (प्रतिष्ठा) पेपर - द्वितीय पत्र

"कुटैत कीलक जाँता" कथाक सारांश

प्रस्तुत कथा "कुटैत कीलक जाँतक" कथाकार प्रो० मायानन्द मिश्र द्वारा रचित प्रसिद्ध कथा अछि। इ कथा "मैथिली कथा धारा" कथासंग्रह मे कामख्या देवी, साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा संग्रहीत कयल गेल अछि। प्रो० मायानन्द मिश्र प्रकृति ओ सौन्दर्यक सफल गीतकार, रस मुग्ध, प्रेम विमुग्ध प्राणी छथि। एहि प्रकारक गुण बहुत कम कथाकार मे पाओल जाइछ, जे हुनक व्यक्तित्व ओ कृतित्वमे सादृश्य रहैछ। मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक नवीन पीढ़िक कवि लोकनिक मध्य लब्ध-प्रतिष्ठित मायाबाबु जीवन मे सदति हास्यक पुटक संग उपस्थापित अपन रचनामे हास्य रसक सुरधारि प्रवाहित करैत रहलाह। हिनक पहिल रचना 'हम रेल देखब' स्कूल पत्रिका मे सन् - 1949 ई० मे प्रकाशित भेलनि। प्रो० मायानन्द मिश्रक प्रसिद्ध मैथिली साहित्य मे हास्य रसक कथाकारक रूप मे चिन्हल गेल, जे हिनक 'मांडक लोटा' कथा अछि।

कुटैत कीलक जाँता कथा मे संयुक्त दू परिवार अनि एक युवती जे अरतिस करैत छथि जे ओ अपन पतिक परिवार आ अपन माय-बाप भाइ बहिनक भरण पोषण करैछ। एहि कथा मे परिवारक गुण-दोष के स्पष्ट विवेचना कयल गेल छथि।

Scanned with CamScanner

एहि कथा मे नायिका रागनी एक प्राइभेट स्कूल शिक्षिका छथीह। स्कूल अन्तिम घंटी बजबामे पाँच-सात मिनट देरी छलैक, ओ गुस्सा मे छलि क्लाससँ बहरयलि आ स्टाफ-रूमक टेबुल पर किताब पटकि कुर्सी पर लदि दऽ बैसि गेलि। ओहि समय मे बिजली नहि छल, पंखा बन्द। कुनका मोन आर ओत प्रोत भऽ उठलैक। पंखाक स्वीच चालू करबाक एक रत्ती इच्छा नहि भऽ मेलैक। पर्सँ रुमाल बाहर निकालि मुँहपर घामक बुनबुनाके पोछि लेलक। स्कूलक दाई के रागनी बोलाथिन —

"पंखा खोलो।"
"खोल देल हैं.... घंटी नाहि लागल इसीसे---।"
घंटी नहीं लगी है---
तो तुम कौन पूछनेवाली होती हो, घंटी नहीं लगी है
बड़ी दीदी तुम्ही हो? जाओ भागो सामने से।
डेमिल इडियट---!"

मिसेज खन्ना बीचमे बाजि उठलि - जे हमर हाथ मे घड़ी नहि अछि, जे हम बीच घंटी मे आयल छी। घंटी लागय सँ पाँच सात मिनट पहिने हम आयल छी।

रागिनी कँ विवाह भ' चुकल छन्हि। पति पटना सचिवालय मे ~~क्लर्क~~ कर्क छन्हि। पतिकँ गाममे संयुक्त परिवार मासे-मास रुपैया पठबए पड़ैत छन्हि। एही कथा मे रागिनी कहैत अछि —

"जानती हो। संयुक्त परिवार प्रथा क्या है? कुछ है कुआँ, जो तुरंत मार नहीं देता, चीटे-चीटे मारता है, गला-गला कर तोड़ता है।"

गाममे वृद्ध माता-पिता, भाई-बहिन, पित्ती-पितिआइन आ खेती-बाड़ीमे रौदा-दाही। रागिनीक पति सौंसे परिवारमे कुलशिरोमणि। अपन आ गामक परिवारकेँ मेनटेन करब। ओम्हर रागिनीक परिवार वृद्ध लकवा आ

Scanned with CamScanner

दमाग्रस्त पिता आ एक बहिन कुमारि सुरेखा। ओहि बिमार बाबूजी के छोड़ि कऽ पटना कोना चल जायब। रागिनि पति कय बेर कहने छल जेँ पटना संगे चलु ओत रहब। एहि बात के कथाकार कथाक माध्यम सँ एहि रूप मे कहलैन —

"कोना आ बाबूजी केँ छोड़ि कऽ पटना चल जायत? कोन उपाय होयतनि हुनक? आ सुरेखा? ओहो कतेक पर रहति? छोट बहिन माय मऽ कऽ नहि जन्म लेल छैक? बस दु एक बर्षमे एकरो विवाह मऽ जयतैक, हों रेखा आ अरेखा जकाँ पतिक संङ चल ~~आत~~ जायत। तखन बचलाह बाबूजी आ हम। बस किछु दिन... किछु.... फेर अन्हरिया बीति जयतैक, भोर मऽ जयतैक, भोर, पटना जयबला भोर।

बाबूजी कहैत रहथि जे छुट्टी काज मे दबाई लेने आयब तँ मान पाड़ि देब। मुदा रागिनि कहलनि जे मौन "आछि हमर... हमरा हृदय मौन रहैत आछि; जाउ, अपन काज कऽ जाउ" एहि क्रम छः सात बर्षसँ अर्थात जहियासँ बाबूजी लकबासँ ग्रस्त भेल छल।

कुछ पति-पत्नी संयुक्त परिवारक बोझ केँ उठौत अपन सुख-सौरभसँ कोसों दूर जीवन जीबा लेल विवश छल। कतेक बेर रागिनी केँ पति कहबो कैलकनि जे नोकरी छोड़ि पटना चलु मुदा रागिनी शय्याधारी पिता आ कुमारि बहिनक छोड़ि अपन सुखक लेल कोना चलि जायत।

मिसेज मालिक एक दिन स्कूलक स्टाफ रूममे बाजल छलीह —

"संयुक्त परिवार के चलौनाय मामूल बात नहि आछि।

आइ दिन मिसेज मालिकक बात बड़ अधलाह लागल छलनि, अनैतिक, अवांछित बुझना गेलैन। मुदा आइ उठलीह त' भोरका चाह चीनीक अभावमे नहि भेटलनि। रागिनीकेँ मन व्यथित भ' उठलनि आ छोट बहिन सुरेखा पर बड़ तामस उठलनि। चन्या छलि अहाँ सन, अहाँ सन हमर भ' जायब। रागिनी तैयार भ' बिनु चाह पिउने स्कूल चलि देलनि। आन दिन चलबा काल ~~हमर भ' जायब। रागिनी~~ बाबूजीकेँ एक झाँक देखैत आ आज्ञा लैत छलीह मुदा आइ नमसो आइ सात वर्षक अभ्यास औपचारिकता आ नाटकीयता सँ मात्र बुझबा मे अयलैक। ओ सोझे बाहि गेलीह। स्कूलो मे कखनो मन नहि लगलनि। क्लास सँ घंटी बजबासँ पूर्वहि चल अयलीह। लोक सभ मे दाई पर तामस झाड़लनि त' मिसेज खन्ना सँ बकझक भ' गेलनि। स्कूलक बसकेँ प्रतीक्षा नहि कयलनि आ तीक्ष्ण रौद मे पैदले चलि देलनि। रागिनी चलितो जाथि आ सोचैत आछि — ओ बात-बात पर किएक खीझा उठैत आछि। सुरेखा कोन दोख छलैक जे हम डाँटि देलियैक। बाबूजीक उपेक्षा कोना हम क'केँ चलि देलौं? की? हमहुँ मिसेज मालिकजकाँ बनाहि त' ने भ' जायब।